संकट मोचन इकतीसा
(सचित्र)

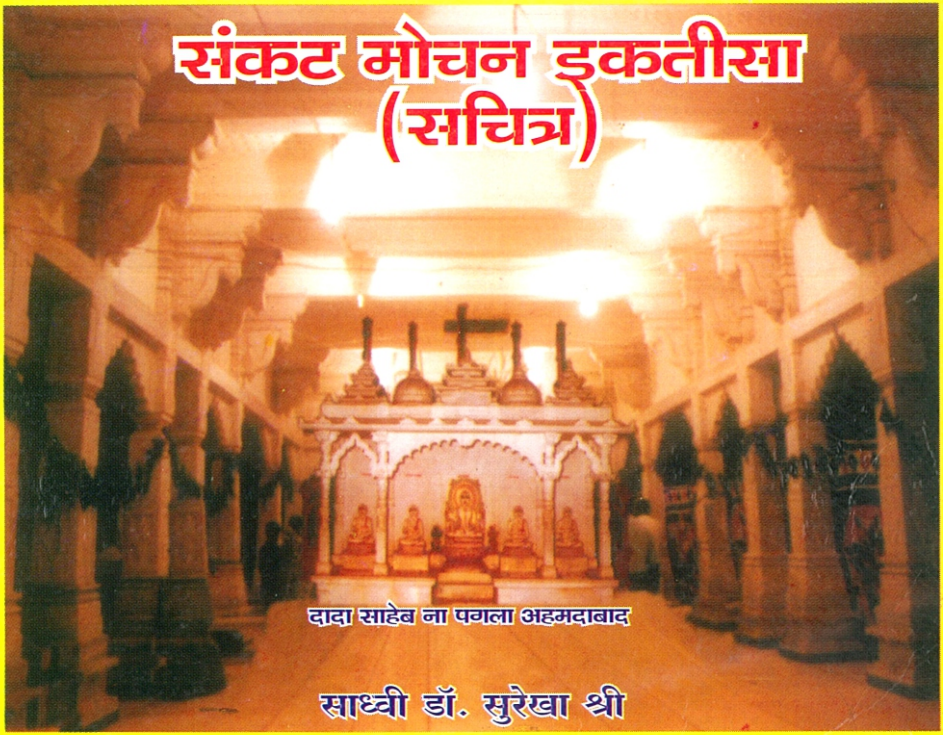

दादा साहेब ना पगला अहमदाबाद

साध्वी डॉ. सुरेखा श्री

संकट मोचन इकतीसा (सचित्र)

प.पू. समता मूर्ति स्व. प्रव. श्री विचक्षण श्री जी म.सा.
की सुशिष्या, संघ संगठन प्रेरिका प.पू. मनोहर श्री जी म. सा.
प. पू. मुक्ति प्रभा श्री जी म.सा. की चरणाश्रिता साध्वी डॉ. सुरेखा श्री

स.२०५७ दीपावली / प्रथमावृत्ति / २१००० प्रति / मुल्य १० रु.
प्रकाशन / प्राप्तिस्थान - श्री अहमदाबाद खरतरगच्छ जैन ट्रस्ट
दादा साहेब ना पगला, नवरंगपुरा, अहमदाबाद पि.३८०००९ फोन - ६४०३५१३

नूतन वर्षाभिनन्दन

शा भंवरलाल, नेमीचंद, मोतीलाल, ललितकुमार, राजकुमार, कैलाशकुमार,
गोतमचंद, मनीष, मिशाल संकलेचा रासोणी परिवार पादरुवालों की ओर से सादर भेंट

M/s. कुलदीप केमिकल्स, चेन्नई. ☎ : 5242819
M/s. रुपम कलेक्शनस्, हैदराबाद. ☎ : 4612258

दादा जिनदत्त सूरी अहमदाबाद

स्तुति

दासा S नुदासा इव सर्व देवा,
यदीय पादाब्ज तले लुठन्ति ।
मरुस्थली कल्पतरु स जीयात्,
युगप्रधानो जिनदत्त सूरी : ॥

॥ दोहा ॥

श्री गुरुदेव दयाल को,
मन में ध्यान लगाय ।
अष्ट सिद्धि नवनिधि मिले,
मनवांछित फल पाय ॥

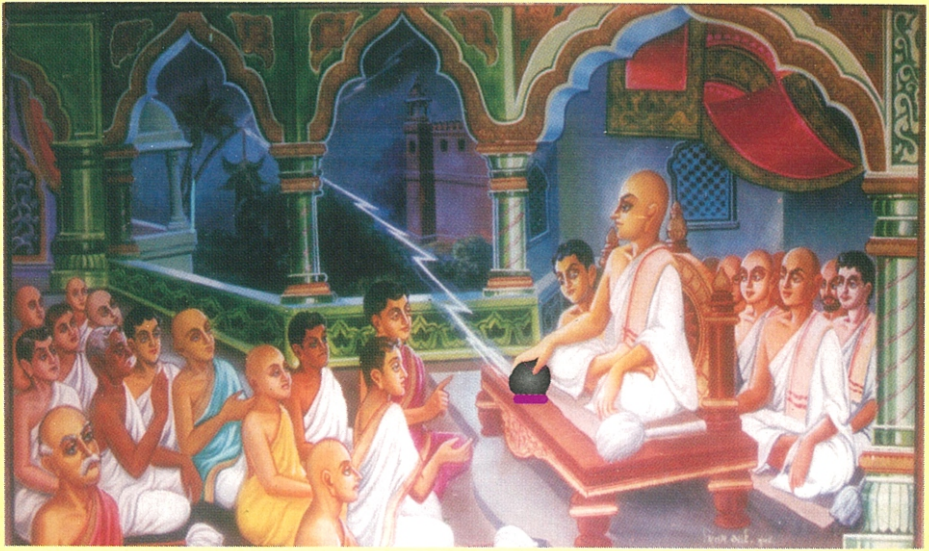

श्री गुरु चरण-शरण में आयो ।
देख दर्श मन अति सुख पायो ।
दत्त नाम दुःख भंजन हारा,
बिजली पात्र तले धरनारा ।। १ ।। चौ ।।

उपशम रस का कन्द कहावे,
जो समरे फल निश्चय पावे ।
दत्त सम्पत्ति दातार दयालु,
निज भक्तन के हैं प्रतिपालु ।। २ ।।

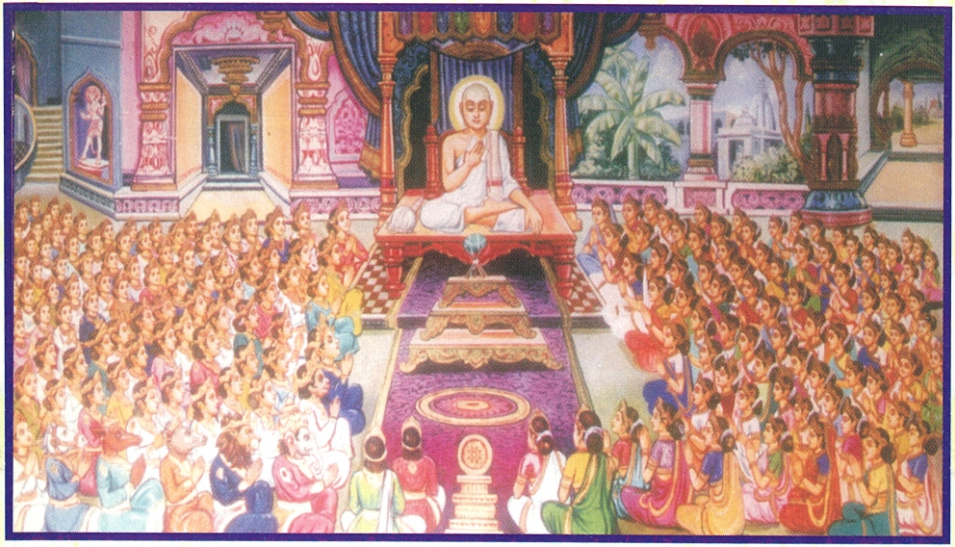

बावन वीर किये वश भारी,
तुम साहिब जग में जयकारी ।
जोगणी चौंसठ वश कर लीनी,
विद्या पोथी प्रगट कीनी ।। ३ ।।

पाँच पीर साधे बलकारी,
पंच नदी पंजाब मझारी ।
अन्धों की आँखें तुम खोली,
गूंगों को दे दीनी बोली ।। ४ ।।

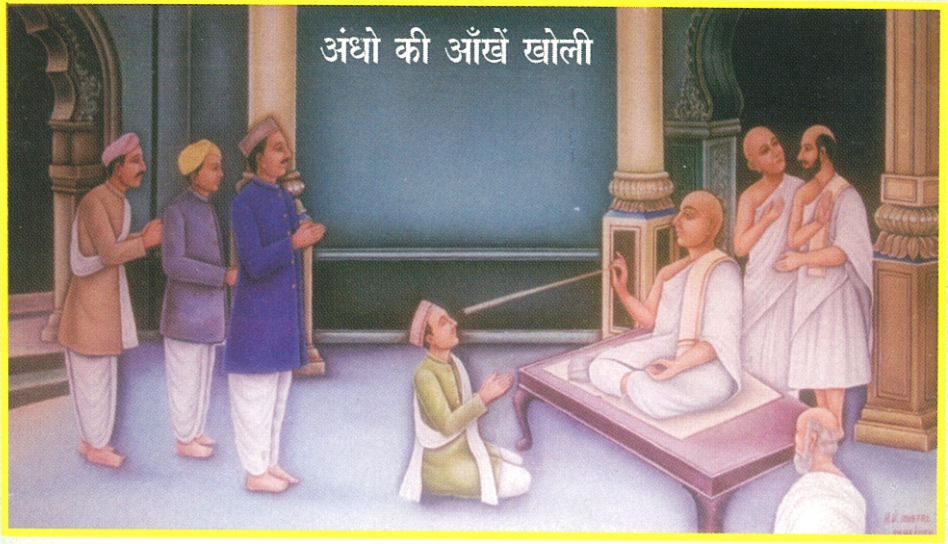

गुरु वल्लभ के पाट विराजो,
सूरियन में सूरज सम साजो ।
जग में नाम तुम्हारो कहिये,
परतिख सुर तरु सम सुख लहिये।। ५ ।।

कांकरिया	नारायण	बडेर
काला	मुकिम	वरडिया
कोटेचा	रांका	बलाई
कोठारी	रारखेचा	बांठिया
खूजांची	लवरिया	बाफणा
गोरा	नवलखा	बुच्चा
गोलेच्छा	नाहटा	बोथरा
चोरडीया	नाहर	बोहरा
चोपडा	पटवा	भंसाली
भटनेराचौधरी	पारख	मुंखलेचा
भलारसिया	पुगलिया	सांभरीया
भरा	फोफलिया	सापद्राह
छाजेड	बच्छावत	साषणसुखा
जिन्द्राणी	रामसेन्या	सुखाणाची
झालोरी	कटारीया	हरखावत
झाबक	लूणावत	सेठिया
दफतरी	लूणिया	टोशी
हला	लोढा	बेंगानी
दुगड़	शेखावत	महातियाण
दुधेडीया	श्रीश्रीमाल	डागा
धाडीवाल	सेचेती	ढढा

इष्ट देव मेरे गुरुदेवा, गुणिजन मुनिजन करते सेवा ।
तुम सम और देव नहीं कोई, जो मेरे हितकारक होई ॥ ६ ॥

विक्रमपुर में हजारों को एक साथ दीक्षा दी

तुम हो सुर तरु वांछित दाता,
मैं निशदिन तुमरे गुण गाता ।
पार ब्रह्म गुरु हो परमेश्वर,
अलख निरंजन तुम जगदीश्वर ।। ७ ।।

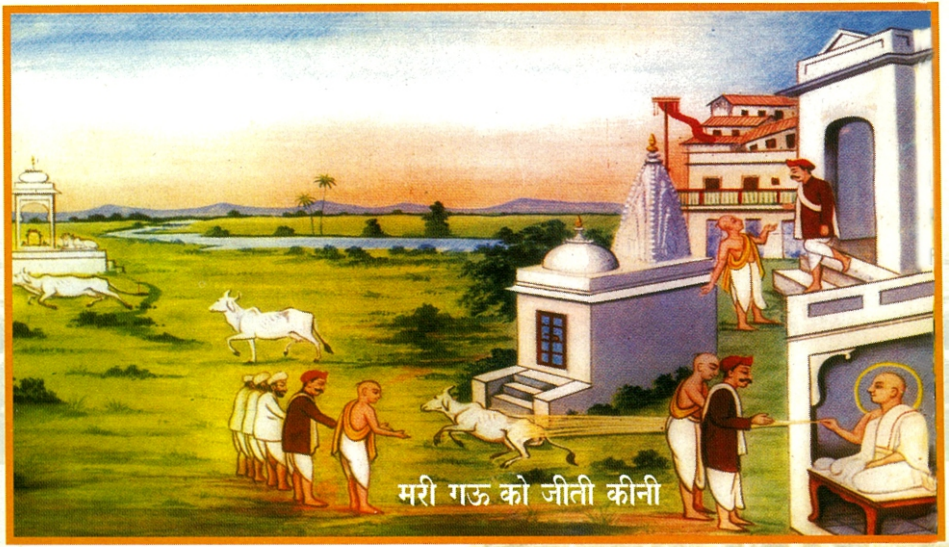

तुम गुरु नाम सदा सुख दाता,
जपत पाप कोटि कट जाता ।
कृपा तुम्हारी जिन पर होई,
दुःख कष्ट नहीं पावे सोई ।। ८ ।।

ओसवंश की स्थापना

अभय दान दाता सुखकारी,
परमातम पूरण ब्रह्मचारी ।
महाशक्ति बल बुद्धि विधाता,
मं गुरु नित उठ तुम्हें मनाता ।। ९ ।।

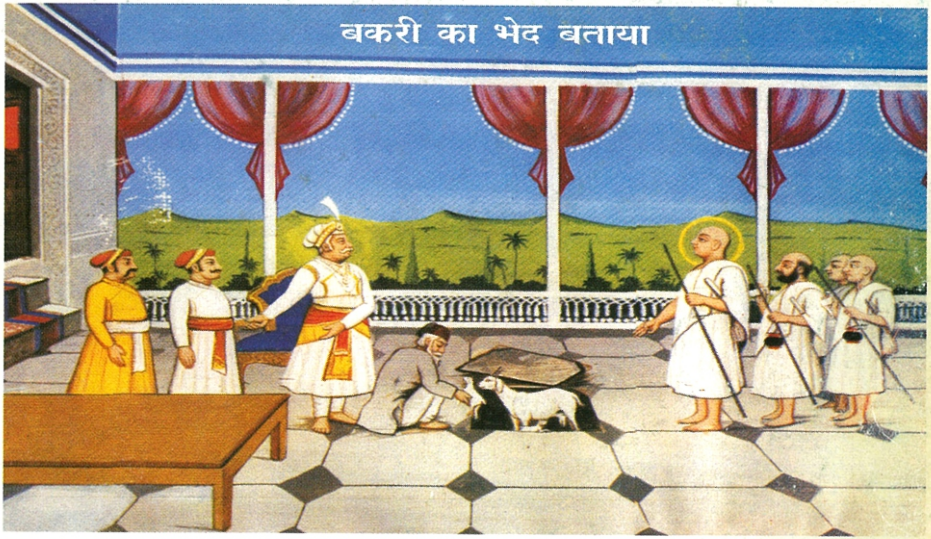

तुम्हारी महिमा है अति भारी,
टूटी नाव नई कर डारी ।
देश-देश में थुंभ तुम्हारा,
संघ सकल के हो रखवाला ।। १० ।।

श्री जिनदत्त सूरी दादा गाँव मंदिर की प्राचिन प्रतिमाजी
(धोलका)

सर्व सिद्धि निधि मंगल दाता,
देव परी सब शीश नमाता ।
सोमवार पूनम सुखकारी,
गुरु दर्शन आवे नर-नारी ॥ ११ ॥

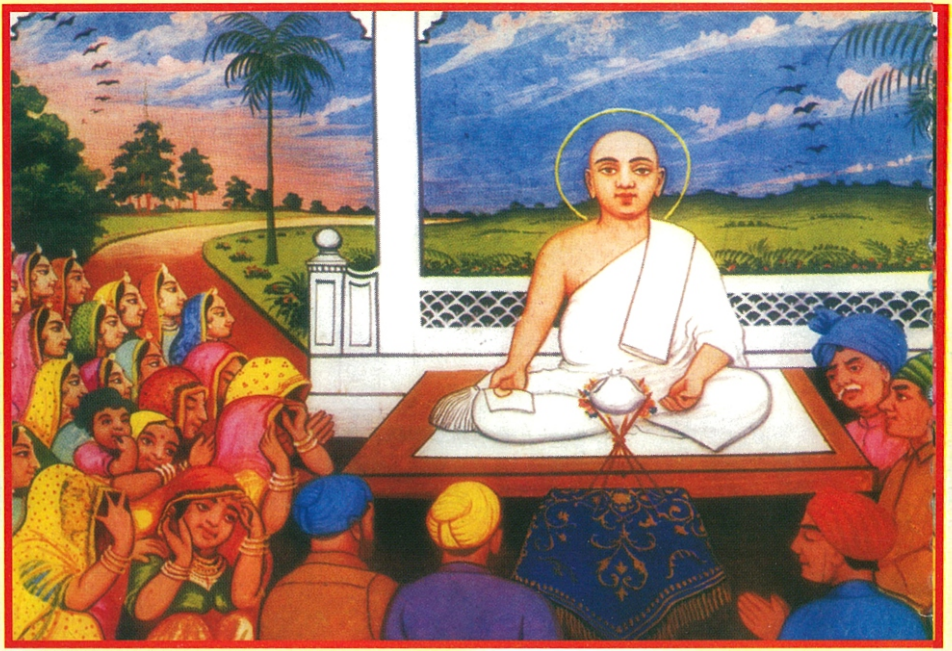

गुरु छलने को किया विचारा, श्राविका रुप जोगणी धारा ।
कीली उज्जयिनी मझधारा, गुरु गुण अगणित किया विचारा ॥ १२ ॥

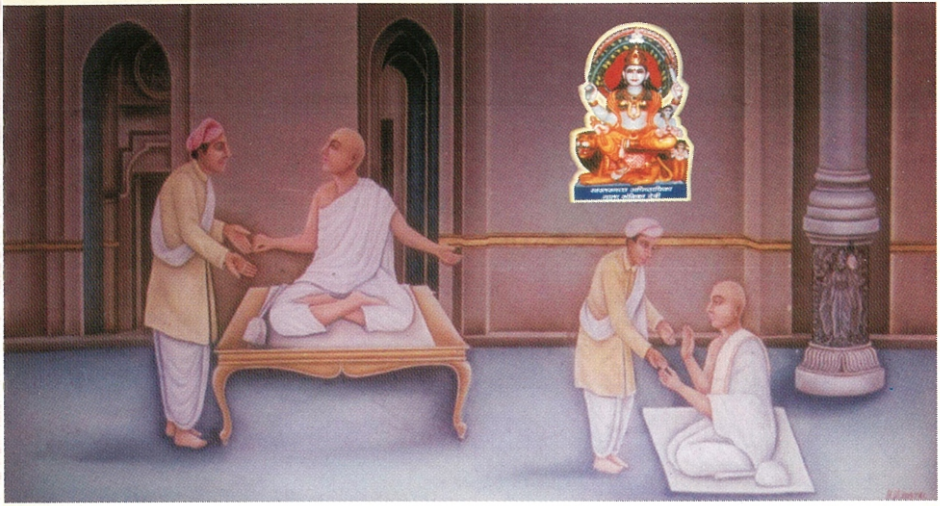

हो प्रसन्न दीने वरदाना,
सात जो पसरे मही दरम्याना ।
युगप्रधान पद जन हितकारा,
अंबड मान चूर्ण कर डारा ।। १३ ।।

मात अंबिका प्रकट भवानी,
मंत्र कलाधारी गुरु ज्ञानी ।
मुगल पूत को तुरत जिलाया,
लाखों जन को जैन बनाया ।। १४ ।।

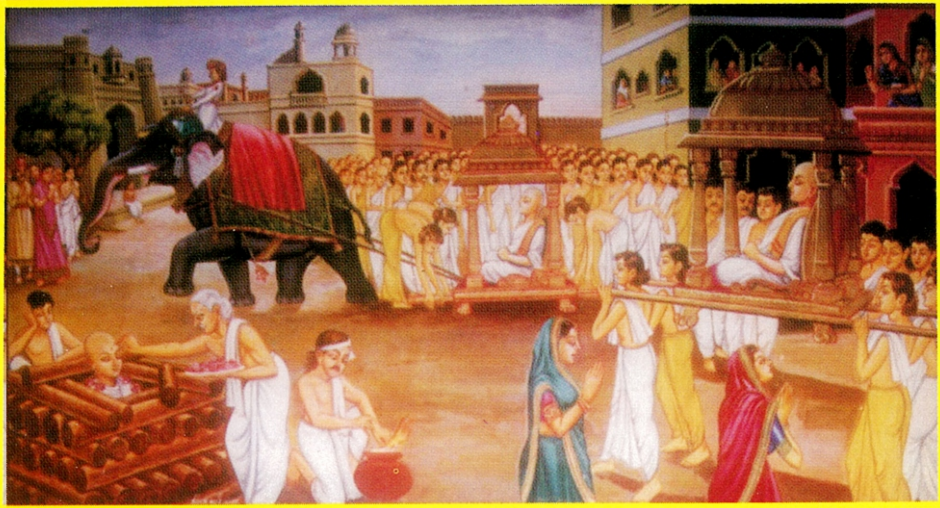

दिल्ली में पतशाह बुलावे,
गुरु अहिंसा ध्वज फहरावे ।
भादो चौदस स्वर्ग सिधारे,
सेवक जन के संकट टारे ।। १५ ।।

जो पूजे दिल्ली में ध्यावे,
संकट नहीं सपने में आवे ।
ऐसे दादा साहेब मेरे,
हम चाकर चरणन के चेरे ।। १६ ।।

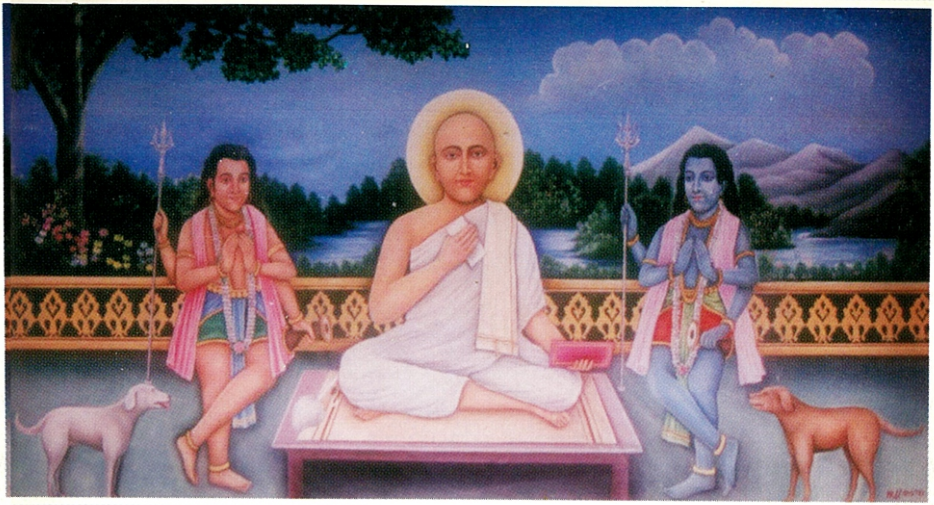

निशदिन भैंरु गोरे काले,
हाजिर हुकम खड़े रखवाले ।
कुशल करण लीनो अवतारा,
सद्गुरु मेरे सानिधकारा ।। १७ ।।

डूबती जहाज भक्त की तारी,
पंखी रुप धर्यो हितकारी ।
संघ अचंभा मन में लावे,
गुरु तब शुभ व्याख्यान में हाल सुनावे ।। १८ ।।

गुरु वाणी सुन सब हरखाये,
गुरु भवतारण तरण कहाये ।
समयसुंदर की पंच नदी में,
फट गई जहाज नई की छिनमें ।। १९ ।।

अब है सद्गुरु मेरी बारी,
मुझ सम पतित न और भिखारी
श्री जिनचंद्रसूरि महाराजा,
चौरासी गच्छ के सिरताजा ।। २० ।।

अकबर को अभक्ष्य छुडायो,
अमावास को चाँद उगायो ।
भट्टारक पद नाम धरावे,
जय जय जय जय गुणि जन गावे ।। २१ ।।

लक्ष्मी लीला करती आवे, भूखा भोजन आन खिलावे ।
प्यासे भक्त को नीर पिलावे, जलघर उण वेला ले आवे ।। २२ ।।

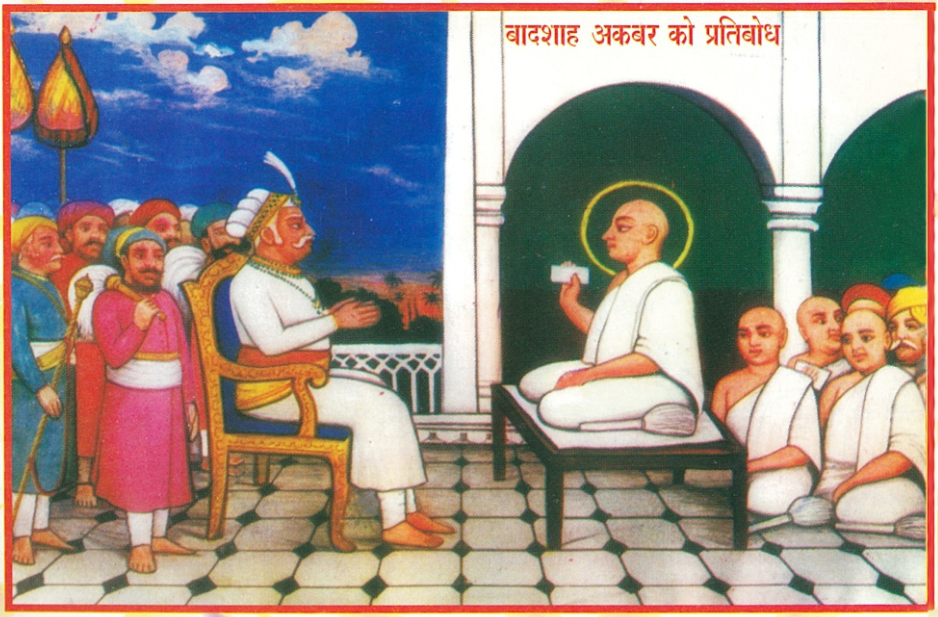

अमृत जैसा जल बरसावे, कभी काल नहीं पड़ने पावे ।
अन्न धन से भरपूर बनावे, पुत्र पौत्र बहु सम्पति पावे ।। २३ ।।

चामर युगल ढुले सुखकारी,
छत्र किरणीया शोभा भारी ।
राजा राणा शीश नमावे,
देव परी सबही गुण गावे ।। २४ ।।

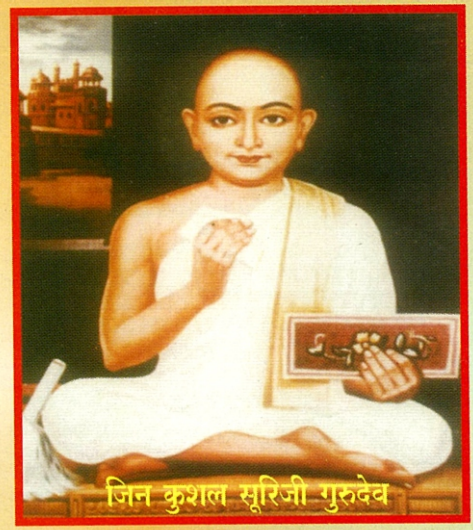

पूरव पश्चिम दक्षिण तांई
उत्तर सर्व दिशा के मांही
ज्योति जागती सदा तुम्हारी
कल्पतरु सद्गुरु गुणधारी ।। २५ ।।

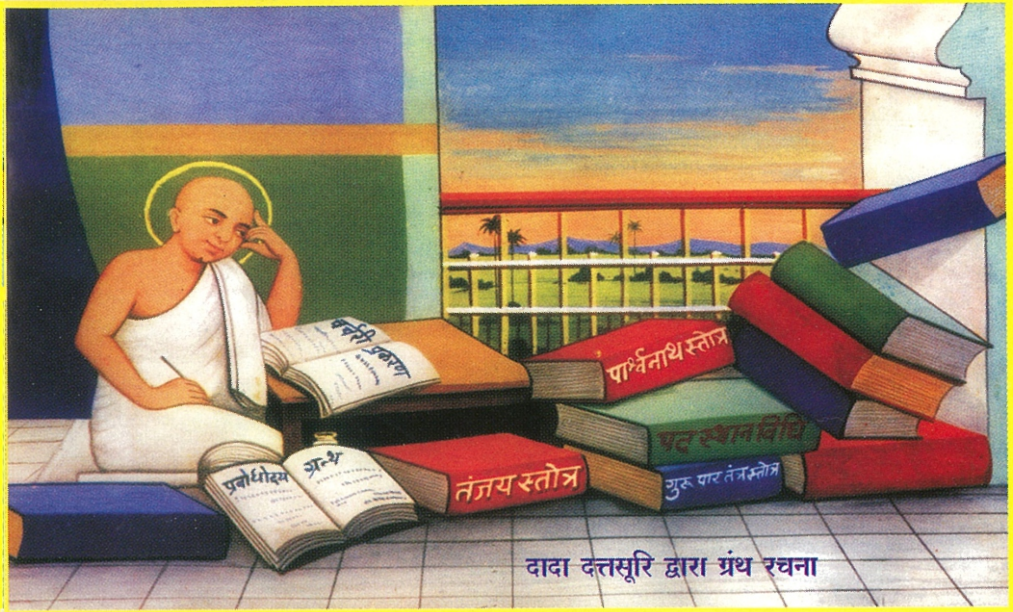

दादा दत्तसूरि द्वारा ग्रंथ रचना

विजय इन्द्रसूरीश्वर राजे, छ़डीदार सेवक संग साजे ।
जो यह गुरु इकतीसा गावे, सुंदर-लक्ष्मी लीला पावे ।। २६ ।।

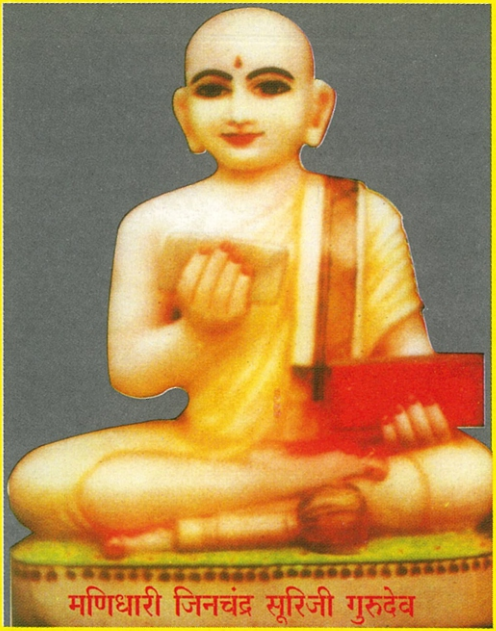

मणिधारी जिनचंद्र सूरिजी गुरुदेव

जो यह पाठ करे चित्त लाई, सद्गुरु उनके सदा-सहाई ।
वार एक सौ आठ जो गावे, राजदंड बंधन कट जावे ।। २७ ।।

श्री जिनदत्त सुरि जी दादा स्वर्गस्थली - अजमेर दादावाडी

संवत् आठ दोय हजारा, आसो तेरस शुक्कर वारा ।
शुभ मुहूरत वर सिंह लगन में, पूरण कीनो बैठ मगन में ॥ २८ ॥

श्री मणिधारी जिनचँद्र सूरिजी
स्वर्गधाम महरौली (दिल्ली)

सद्गुरु का स्मरण करे,
धरे सदा जो ध्यान ।
प्रातः उठी पहिले पढे,
होय कोटि कल्याण ॥ २९ ॥

सुनो रतन चिंतामणी,
सद्गुरु देव महान।
वंदन श्रीगोपाल का,
लीजे विनय विधान ॥ ३० ॥

अकबर प्रतिबोधक
श्री जिनचंद्र सूरीश्वरजी दादा स्वर्ग भूमि
बिलाड़ा दादावाडी

चरण शरण में मैं रहूं
रखियो मेरा ध्यान ।
भूल चूक माफी करो
हे मेरे भगवान ॥ ३१ ॥

• दादा गुरुदेव की आरती •

जय जय गुरुदेवा, आरती मंगल मेवा ।
आनन्द सुख लेवा, जय जय गुरुदेवा ।। टेर ।।
एक व्रत, दोय व्रत, तीन, चार व्रत, पंचम व्रत सोहे ।
भविक जीव निस्तारण, सुरनर मन मोहे ।। १ ।।
दुःख-दोहग सब हर कर सद्गुरु, राजन प्रतिबोधे ।
सुत लक्ष्मी वर देकर, श्रावक कुल शोधे ।। २ ।।
विद्या पुस्तक धरकर सद्गुरु मुगल पूत तारे ।
बस कर जोगण चौंसठ, पाँच पीर सारे ।। ३ ।।
बीज पडन्ती वारी सद्गुरु, समुद्र जहाज तारी ।
वीर किये वश बावन, प्रगटे अवतारी ।। ४ ।।
जिनदत्त जिनचंद्र कुशल सूरीश्वर, खरतरगच्छ राजा ।
चौरासी गच्छ पूजें, मन वांछित ताजा ।। ५ ।।
मन शुद्ध आरती कष्ट-निवारन, सद्गुरु की कीजे ।
जो मांगे सो पावे, जग में यश लीजे ।। ६ ।।
विक्रमपुर में भक्त तुम्हारो, मन्त्र कलाधारी ।
नित उठ ध्यान लगावत, मनवांछित फल पावत ।
रामऋद्रि सारी ।। ७ ।। ॐ जय जय ।

मंगल दीपक

मंगल दीपक गुरु का कीजे ।
मनंवाछित फल कारज सीझे ।। १ ।।
मंगल दीप मंगल अड़ भासे ।
घर-घर मंगल भाव प्रकाशे ।। २ ।।
करे - करावे मंगल माला ।
अन्न धन लक्ष्मी लहे सुविशाला ।। ३ ।।
अलिय विघनहर मंगल दीवो ।
ऋद्धि सार भविजन चिरंजीवो ।। ४ ।।

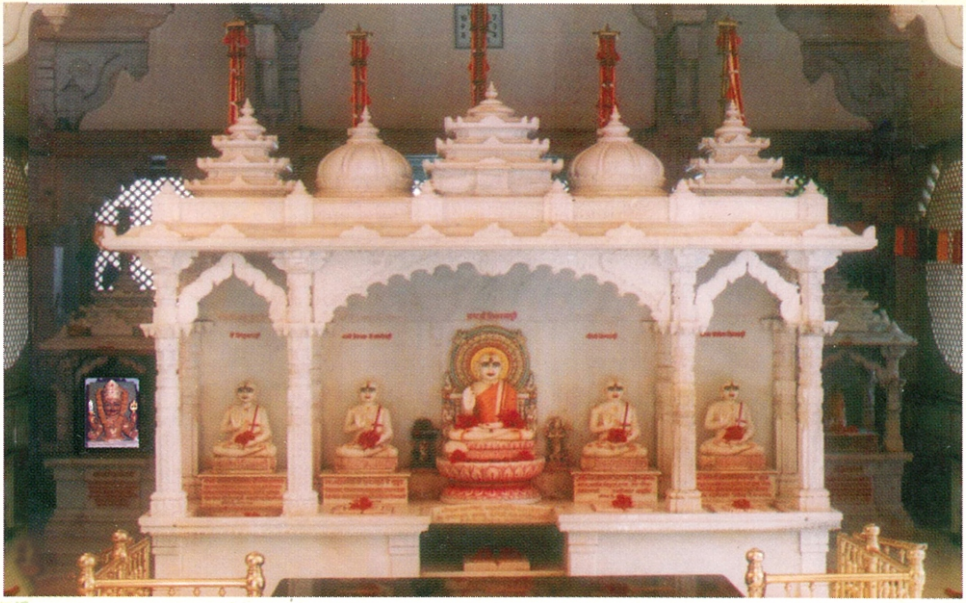

श्री जिनदत्तसूरि दादावाडी

दादा साहेब ना पगला, नवरगंपुरा, अहमदाबाद.

RISHABH (079) (O) 2161881 (R)2850363